22 OCT 6 2026.qxd 21-10-2026 18:59 Page 1

रिश्तोंका नया सन्तुलन

वर्तमान वैश्विक सन्दर्भमें अमेरिकाके विदेशमंत्री मार्को रुबियोकी भारत यात्रा और परराष्ट्रमंत्री एस. जयशंकरके साथ मंगलवारको मुम्बईमें हुई वार्ता काफी महत्वपूर्ण मानी जायगी। इसे केवल एक नियमित कूटनीतिक भेंटके रूपमें देखना उचित नहीं होगा। रुबियोकी यात्रा ऐसे समयमें हुई है जब भारत-अमेरिकी सम्बन्धोंमें एक ओर जहां रणनीतिक निकटता बढ़ रही है तो दूसरी ओर टैरिफ, रूसी तेल, व्यापार समझौते और ऊर्जा सुरक्षा जैसे मुद्दोंपर मतभेद भी बने हुए हैं। एक अच्छी बात यह है कि दोनों देशोंने व्यापार समझौतेको यथाशीघ्र पूरा करनेकी प्रतिबद्धता जतायी है। रुबियोने स्वीकार किया है कि हम बहुप्रतीक्षित समझौतेके काफी करीब पहुंच गये हैं। अमेरिकी विदेश मंत्रीकी यात्रा ऐसे अन्तरराष्ट्रीय माहौलमें हुई है, जिसमें यूक्रेन युद्ध, पश्चिम एशियाका संकट, ऊर्जा बाजारमें अस्थिरता और अमेरिका-चीन प्रतिस्पर्धा विश्व राजनीतिको काफी प्रभावित कर रहे हैं। इन परिस्थितियोंमें भारतकी सामरिक स्थिति अमेरिकाके लिए काफी महत्वपूर्ण हो गयी है। ऊर्जा संकटने दोनों देशोंके हितोंको एक-दूसरेके निकट ला दिया है। रुबियोने भारतकी ऊर्जा आपूर्ति श्रृंखलामें अमेरिकी ऊर्जाकी भूमिका बढ़ानेको महत्वपूर्ण बताया है। इसका दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष हिन्द-प्रशान्त और चीन है। अमेरिका भारतको, क्षेत्रीय शक्ति-सन्तुलनमें एक महत्वपूर्ण साझेदार मानता है। क्वाडके सन्दर्भमें भी भारतकी भूमिका अमेरिका, जापान और आस्ट्रेलियाके लिए महत्वपूर्ण है। इसलिए अमेरिका भारतके साथ मतभेदोंको इतना बढ़ाना नहीं चाहेगा जिससे कि व्यापारिक रणनीतिक साझेदारी प्रभावित हो। रुबियोकी यात्राको टैरिफ-आधारित टकरावसे बातचीत और समझौतेकी ओर लौटनेकी कोशिशके रूपमें भी देखा जा सकता है। भारत-अमेरिका सम्बन्धोंमें सबसे संवेदनशील मुद्दोंमें एक रूसी ऊर्जा खरीद है। अमेरिका चाहता है कि भारत रूसी ऊर्जापर निर्भरता कम करे। इसका समाधान किसी एक पक्षकी पूर्ण जीतके रूपमें नहीं, अपितु ऊर्जा स्रोतोंके विविधीकरणके रूपमें खोजनेका प्रयास दिखायी देता है। भारतके लिए चुनौती यह है कि वह अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाये रखते हुए अमेरिकाके साथ ऊर्जा सहयोग बढ़ाये। यह सन्तुलन आने वाले समयमें भी भारतीय विदेश नीतिकी प्रमुख कसौटी रहेगा। वार्तामें रक्षा, महत्वपूर्ण एवं उभरती तकनीक तथा नागरिक परमाणु सहयोग भी विशेष मुद्दे रहे। इसलिए दोनों देशोंका सम्बन्ध अब रक्षा सहयोगसे आगे बढ़कर तकनीकी तथा औद्योगिक साझेदारीकी दिशामें जा रहा है। दोनों देशोंके बीच सम्बन्धोंका भविष्य साझा हितों और असहमतियोंके प्रबन्धनपर निर्भर करेगा। रुबियोकी यात्राको व्यावहारिक कूटनीतिक मोड़के रूपमें देखा जाना चाहिए और यह आपसी सम्बन्धोंका नया सन्तुलन है।

मणिपुरके हालात चिन्तनीय

देशके पूर्वोत्तर राज्य मणिपुरमें लम्बे समयमें जारी हिंसक घटनाएं थमनेका नाम नहीं ले रही है। बार-बार हिंसाका भड़कना लोगोंकी जान-मालकी सुरक्षा और शान्ति व्यवस्थाके लिए केन्द्र और राज्य सरकारके लिए बड़ी चुनौती बनती जा रही है। लोगोंमें भारी आक्रोश है और अब वे मुख्य मंत्री युमनाम खेमचन्द सिंहकी सरकारके खिलाफ सड़कोंपर उतर आये हैं जिससे स्थिति बदसे बदतर हो चुकी है। सोमवारको उग्रवादियोंकी गोलीबारीमें मैतेई समुदायके तीन लोगोंकी हत्याके विरोधमें मंगलवारको २४ घण्टेके बन्दके चलते घाटीके पांच जिलोंमें जनजीवन पूरी तरह प्रभावित रहा। इंफाल पूर्व और पश्चिम, विष्णुपुर, थौबल और काकचिंगमें बाजार, शिक्षण संस्थान, व्यावसायिक प्रतिष्ठान बंद रहे। यहांतक कि सार्वजनिक परिवहन भी ठप रहा, जिससे लोगोंको आने-जानेमें भारी दिक्कतोंका सामना करना पड़ा। उल्लेखनीय है कि सोमवारको सुबह इंफाल पूर्वी और कागपोकपी जिलोंकी सीमापर सुनरोक क्षेत्रमें जलावनकी लकड़ी बीन रहे मैतेई समुदायके १६ लोगोंपर संदिग्ध उग्रवादियोंने घात लगाकर हमला कर दिया। इस गोलीबारीमें तीन लोगोंकी मौत हो गयी और तीन लोग घायल हो गये, जबकि तीन लोग लापता हैं। इस कायरतापूर्ण और बर्बर हत्याके विरोधमें नेटिव पीपुल्स कमेटी मणिपुरने मंगलवार और बुधवारको बन्दका आह्वान किया था। प्रदर्शनकारियोंने मंगलवारको मुख्य मंत्री युमनाम खेमचन्द सिंह, उपमुख्य मंत्री नेमचा किपजेन, गृहमंत्री गोविन्द कोंथौजमका इस्तीफा मांगा और उनके पुतले फूंके। इस दौरान पुलिस और सुरक्षाबलोंके संयुक्त तलाशी अभियानमें तीन संदिग्धोंको गिरफ्तार किया गया है, जिसमें दोने हमला करनेकी बात स्वीकार की है। इनकी निशानदेहीपर पहाड़ी इलाकोंसे हथियार और गोला-बारूद बरामद किया गया है। यह गम्भीर चिन्ताका विषय है कि तीन मई २०२३ से जारी मैतेई और कुकी समुदायके बीच भड़की हिंसा अबतक जारी है। केन्द्र और राज्य सरकारको जातीय समूहोंके बीच पनप रहे विद्वेषको समझना होगा और एक सर्वमान्य हल निकालना होगा, तभी शान्तिका माहौल बनाया जा सकता है।

लोक संवाद

चाय और काफीसे हानि

महोदय,-कई लोगोंके लिए दिनकी शुरुआत बिना चाय या काफीके होती ही नहीं है। परन्तु वह इस बातसे अनजान होते हैं कि इसकी ज्यादा लत किडनीको नुकसान पहुंचा सकती है। स्वस्थ लोगोंके लिए इनका सीमित मात्रामें सेवन आम तौरपर सुरक्षित होता है, लेकिन इनकी मात्रा इन्हें बनानेके तरीके और पहलेसे मौजूद स्वास्थ्य संबंधी स्थितियां यह तय कर सकती हैं कि ये पेय पदार्थ किडनीकी सेहतपर कैसा असर डालते हैं। कैफीन, हाइड्रेशन और किडनीके काम करनेकी प्रक्रियाको समझते हैं विस्तारसे। गुर्दा रोग विशेषज्ञने बताया कि कैफीनका हल्का डाययुरेटिक असर होता है। इसका मतलब है कि यह कुछ समयके लिए पेशाब बननेकी मात्राको बढ़ा सकता हैए खासकर उन लोगोंमें जो इसके सेवनके आदी नहीं हैं। हालांकि चाय और काफीका सीमित मात्रामें सेवन करनेसे शरीरमें तरल पदार्थकी मात्रा बढ़ती है और इससे अपने आप डिहाइड्रेशन नहीं होता। ज्यादातर स्वस्थ वयस्कोंके लिए सीमित मात्रामें इन पेय पदार्थोंका सेवन करनेसे किडनीको नुकसान पहुंचनेकी संभावना नहीं होती है। चिन्ताका विषय अक्सर कैफीनका अत्यधिक सेवन और व्यक्तिकी अपनी शारीरिक संवेदनशीलता होती है। कैफीनकी अधिक मात्रा अस्थायी रूपसे ब्लड प्रेशर बढ़ा सकती है, जबकि लम्बे समयतक अनियंत्रित हाई ब्लड प्रेशर क्रोनिक किडनी डिसीज (गुर्दे की दीर्घकालिक बीमारी) के लिए एक बड़ा जोखिम कारक है। डाक्टरने सलाह दी, 'जिन लोगोंको पहलेसे ही हाइपरटेंशन (उच्च रक्तचाप) या किडनीसे जुड़ी समस्याएं हैं, उन्हें अपने कैफीन सेवनके बारेमें अपने डाक्टरसे बात करनी चाहिए।' एक और चिन्ताका विषय किडनी स्टोन (पथरी) का बनना है। दरसअल चायमें ऑक्सालेट होते हैं। ये प्राकृतिक रूपसे पाये जाने वाले यौगिक हैं। यदि कोई व्यक्ति इनका अधिक मात्रामें सेवन करता है तो उनमें कैल्शियम ऑक्सालेट स्टोन बननेका खतरा हो सकता है। यह जोखिम व्यक्तिके खान-पान, तरल पदार्थोंके सेवन और पहले कभी पथरी होनेके इतिहासपर निर्भर करता है। चाय और कॉफीमें बहुत अधिक चीनी, फ्लेवर्ड सिरप या मीठी क्रीम मिलानेसे वजन बढ़ सकता है और टाइप २ डायबिटीजका खतरा भी बढ़ सकता है। डायबिटीज और हाई ब्लड प्रेशर, दोनों ही क्रॉनिक किडनी डिसीज (लम्बे समयतक चलने वाली किडनीकी बीमारी) के प्रमुख कारण हैं। किडनीकी बीमारीसे जूझ रहे लोगोंको, उनकी पोषण संबंधी जरूरतों और लैब टेस्टके नतीजोंके आधारपर, दूध और अन्य चीजोंके सेवनको लेकर अलग-अलग डाइट सलाह की जरूरत पड़ सकती है। एस फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशनके अनुसार ज्यादातर वयस्कोंके लिए रोजाना ४०० मिलीग्राम कैफीनका सेवन करनेसे आम तौरपर कोई बुरा असर नहीं पड़ता, हालांकि हर व्यक्तिकी सहनशक्ति अलग-अलग हो सकती है। इसके साथ ही शरीरमें पानीकी पर्याप्त मात्रा बनाये रखना, चीनीका सेवन कम रखना और ब्लड प्रेशर तथा ब्लड ग्लूकोजको नियंत्रित रखना भी उतना ही जरूरी है। **-वसुधा त्रिवेदी, वाया ईमेल।**

वैश्विक अर्थव्यवस्थाके समक्ष चुनौतियां

विश्व अर्थव्यवस्था ऐसे दौरसे गुजर रही है, जहां विकासकी संभावनाओंके साथ अनिश्चितताओंका दायरा भी लगातार बढ़ रहा है। एक ओर तकनीकी प्रगति और व्यापारिक गतिविधियां आर्थिक वृद्धिको गति दे रही हैं तो वहीं, युद्ध, ऊर्जा संकट और वित्तीय बाजारोंमें अस्थिरता वैश्विक आर्थिक व्यवस्थाकी परीक्षा ले रहे हैं।

❐ महेन्द्र तिवारी

बैंकांकमें १३ से १७ अक्तूबर २०२६ के दौरान आयोजित अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंककी वार्षिक बैठकोंमें वैश्विक चुनौतियोंपर गम्भीर विचार-विमर्श हुआ। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोषकी अक्तूबर २०२६ की विश्व आर्थिक परिदृश्य रिपोर्टके अनुसार, वैश्विक अर्थव्यवस्थाकी वृद्धि दर २०२६ में ३.१ प्रतिशत रहनेका अनुमान है, जबकि २०२७ में इसके बढ़कर ३.४ प्रतिशत होनेकी सम्भावना व्यक्त की गयी है। इसके बावजूद संस्थाने चेतावनी दी है कि मौजूदा आर्थिक मजबूतीको स्थायी मान लेना उचित नहीं होगा। युद्ध, महंगी, ऋण और तकनीकी निवेशसे जुड़े जोखिम इस वृद्धिको प्रभावित कर सकते हैं। वैश्विक अर्थव्यवस्थाकी पहली बड़ी चुनौती युद्ध और उससे उत्पन्न ऊर्जा संकट है। पश्चिम एशियामें जारी संघर्षने कच्चे तेलकी आपूर्ति, समुद्री परिवहन और अंतरराष्ट्रीय व्यापारके सामने नयी कठिनाइयां पैदा की हैं। विशेष रूपसे होर्मुज जलडमरूमध्य जैसे महत्वपूर्ण समुद्री मार्गमें किसी भी प्रकारका व्यवधान दुनियाके अनेक देशोंकी अर्थव्यवस्थाको प्रभावित कर सकता है। इस मार्गसे होने वाला ऊर्जा व्यापार बाधित होनेपर तेल और गैसकी कीमतें बढ़ सकती हैं। इसका प्रभाव केवल पेट्रोल और डीजलतक सीमित नहीं रहता, बल्कि परिवहन, बिजली उत्पादन, कृषि, उर्वरक निर्माण और औद्योगिक उत्पादनकी लागतपर भी पड़ता है। ऊर्जाकी कीमतोंमें वृद्धिका सबसे अधिक बोझ उन देशोंपर पड़ता है, जो अपनी आवश्यकताओंके लिए दूसरे देशोंसे तेल और गैस आयात करते हैं। भारत भी इस श्रेणीमें आता है। यदि अंतरराष्ट्रीय बाजारमें कच्चा तेल महंगा होता है तो देशका आयात व्यय बढ़ सकता है। इससे व्यापार संतुलन, रुपयेकी विनिमय दर और घरेलू महंगीपर दबाव पड़नेकी आशंका रहती है। वस्तुओंके परिवहनकी लागत बढ़नेसे खाद्य पदार्थों और दैनिक उपयोगकी वस्तुओंके दाम भी प्रभावित हो सकते हैं। इस प्रकार युद्धका प्रभाव युद्धक्षेत्रसे हजारों किलोमीटर दूर रहने वाले सामान्य नागरिकोंकी रसोईतक पहुंच जाता है।



वैश्विक अर्थव्यवस्थाकी वर्तमान स्थिति कहती है कि आर्थिक वृद्धि अपने आपमें पर्याप्त नहीं है। विकास तभी टिकाऊ माना जा सकता है, जब वह महंगीको नियंत्रित करने, रोजगार बढ़ाने, सार्वजनिक ऋणको सम्भालने और सामाजिक असमानता घटानेमें भी सहायक हो। युद्ध और व्यापारिक तनावोंको कम करनेके लिए कूटनीतिक प्रयास, सार्वजनिक वित्तमें अनुशासन तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ताके जिम्मेदार उपयोगके लिए प्रभावी नियम समयकी आवश्यकता हैं। विश्वके देशोंको यह समझना होगा कि आजकी परस्पर जुड़ी अर्थव्यवस्थामें किसी एक क्षेत्रका संकट शीघ्र ही दूसरे क्षेत्रोंतक पहुंच सकता है।

अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोषने अक्तूबरकी अपनी रिपोर्टमें २०२६ के लिए वैश्विक महगी दर ४.७ प्रतिशत रहनेका अनुमान लगाया है। इसके बाद २०२७ में इसके घटकर ४.१ प्रतिशत होनेकी संभावना व्यक्त की गयी है। हालांकि ये अनुमान उपलब्ध आंकड़ों और मौजूदा परिस्थितियोंपर आधारित हैं। यदि संघर्ष बढ़ता है, ऊर्जा आपूर्तिमें लम्बे समयतक बाधा आती है या व्यापारिक तनाव गहराता है तो महंगीपर दबाव अनुमानसे अधिक हो सकता है। इसलिए सरकारोंके सामने चुनौती केवल आर्थिक वृद्धि बनाये रखनेकी नहीं, बल्कि आम लोगोंकी क्रयशक्तिकी रक्षा करनेकी भी है। दूसरी बड़ी चुनौती बढ़ता सार्वजनिक ऋण है। अनेक देशोंने महामारी, आर्थिक मंदी, युद्ध और सामाजिक कल्याण योजनाओंके प्रभावोंसे निबटनेके लिए भारी उधारी ली है। अब बढ़ती ब्याज दरों और महंगी होती उधारीके कारण उनके लिए ऋण चुकाना कठिन होता जा रहा है। जब सरकारी आयका बड़ा हिस्सा ब्याज और पुराने कर्जकी अदायगीमें खर्च होता है, तब शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, आधारभूत संरचना और गरीबी उन्मूलन जैसी योजनाओंके लिए संसाधन सीमित हो जाते हैं।

विकासशील देशोंकी स्थिति विशेष रूपसे चिन्ताजनक है। इन देशोंको एक ओर अपने नागरिकोंकी बुनियादी जरूरतें पूरी करनी हैं, वहीं दूसरी ओर आर्थिक विकासके लिए निवेश भी करना है। यदि विदेशी मुद्रामें लिया गया ऋण महंगा हो जाय या उनकी मुद्राका मूल्य गिर जाय तो ऋण चुकानेका बोझ और बढ़ जाता है। ऐसेमें अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंककी भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। जरूरतमंद देशोंको वित्तीय सहायता उपलब्ध करानेके साथ उन्हें ऐसी नीतियां अपनानेमें सहयोग देना आवश्यक है, जिनसे आर्थिक आत्मनिर्भरता बढ़े और भविष्यमें अत्यधिक उधारीकी आवश्यकता कम हो। १७ अक्तूबरको बैंकांकमें हुई अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोषकी अंतरराष्ट्रीय मौद्रिक एवं वित्तीय समितिकी बैठकके बाद जारी वक्तव्यमें युद्धसे उत्पन्न आर्थिक कठिनाइयों और ऊंची ऊर्जा कीमतोंका सामना कर रहे देशोंको अधिक सहायता देनेकी आवश्यकतापर जोर दिया गया। समितिने यह भी स्वीकार किया कि बढ़ते व्यापारिक तनाव और भू-राजनीतिक विभाजनसे वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाएं प्रभावित हो सकती हैं। इससे स्पष्ट है कि आर्थिक संकटका समाधान केवल अलग-अलग देशोंकी नीतियोंसे सम्भव नहीं है। इसके लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग और साझा जिम्मेदारी आवश्यक है।

तीसरी बड़ी चुनौती कृत्रिम बुद्धिमत्ताके क्षेत्रमें तेजीसे बढ़ता निवेश है। इस तकनीकने उद्योग, चिकित्सा, शिक्षा, कृषि, बैंकिंग और संचारके क्षेत्रमें नयी संभावनाएं पैदा की हैं। बड़ी कम्पनियां आंकड़ा केन्द्रों, उन्नत संगणक उपकरणों और नयी तकनीकोंपर भारी धन खर्च कर रही हैं। इससे निवेश, उत्पादन और व्यापारको प्रोत्साहन मिल रहा है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोषने भी माना है कि कृत्रिम बुद्धिमत्तासे संबंधित निवेशने वैश्विक आर्थिक वृद्धिको सहारा दिया है। लेकिन इस विकासके साथ वित्तीय जोखिम भी जुड़े हैं। यदि निवेशकोंकी उम्मीदें वास्तविक उपलब्धियोंसे बहुत आगे निकल जाती हैं तो कम्पनियोंके मूल्यांकनमें असंतुलन पैदा हो सकता है। मान लीजिए कि किसी कम्पनीमें इस उम्मीदसे भारी निवेश किया जाता है कि उसकी नयी तकनीक भविष्यमें बहुत अधिक लाभ देगी। यदि अपेक्षित लाभ नहीं मिलता तो निवेशकोंका विश्वास कमजोर पड़ सकता है। इसके परिणामस्वरूप कम्पनियोंके शेयरोंकी कीमतें गिर सकती हैं, निवेश घट सकता है और वित्तीय बाजारोंमें व्यापक अस्थिरता पैदा हो सकती है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोषकी अक्तूबर रिपोर्टमें कृत्रिम बुद्धिमत्तासे संबंधित निवेशकी संभावित गिरावटको वैश्विक अर्थव्यवस्थाके लिए एक महत्वपूर्ण जोखिम बताया गया है। संस्थाने यह भी संकेत दिया है कि यदि इस तकनीकसे अपेक्षित उत्पादकता लाभ मिलता है तो आर्थिक वृद्धिको अतिरिक्त गति मिल सकती है। अर्थात् इसके परिणाम दोनों दिशाओंमें जा सकते हैं। समस्या तकनीकी विकासमें नहीं, बल्कि वास्तविक क्षमतासे अधिक उम्मीदें लगाने और जोखिमोंकी उपेक्षा करनेमें है। कृत्रिम बुद्धिमत्ताका एक दूसरा पक्ष रोजगार और आर्थिक असमानतासे संबंधित है। नयी तकनीक अनेक कामोंको सरल और तेज बना सकती है, लेकिन कुछ पारम्परिक कार्योंकी आवश्यकता भी घट सकती है। यदि श्रमिकोंको समयपर प्रशिक्षण और नये कौशल प्राप्त करनेके अवसर नहीं मिलते तो रोजगार संबंधी कठिनाइयां बढ़ सकती हैं। तकनीकी निवेशका लाभ उन देशों और कम्पनियोंको अधिक मिल सकता है, जिनके पास पर्याप्त पूंजी, बिजली, डिजिटल आधारभूत संरचना और प्रशिक्षित कर्मचारी हैं। दूसरी ओर कमजोर अर्थव्यवस्थाएं इस परिवर्तनके साथ कदम मिलानेमें पीछे रह सकती हैं। इसलिए तकनीकी प्रगतिके साथ शिक्षा, प्रशिक्षण और सामाजिक सुरक्षापर भी निवेश करना आवश्यक है।

भारतके लिए इन चुनौतियोंमें जोखिमके साथ अवसर भी छिपे हुए हैं। देशको ऊर्जाके विभिन्न स्रोतोंका विकास करना चाहिए, ताकि किसी एक क्षेत्र या आपूर्तिकर्तापर अत्यधिक निर्भरता न रहे। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और अन्य स्वच्छ ऊर्जा विकल्पोंको बढ़ावा देनेसे दीर्घकालमें आयात संबंधी जोखिम कम किये जा सकते हैं। साथ ही सार्वजनिक व्ययमें अनुशासन बनाये रखते हुए शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, अनुसंधान और रोजगार सृजनके लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध कराना जरूरी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ताके क्षेत्रमें भारत अपनी युवा आबादी, तकनीकी प्रतिभा और व्यापक घरेलू बाजारका लाभ उठा सकता है। इसके लिए केवल नयी तकनीक खरीदना पर्याप्त नहीं होगा। देशमें अनुसंधान, कौशल विकास, सुरक्षित आंकड़ा व्यवस्था और स्थानीय आवश्यकताओंके अनुरूप तकनीकी समाधान विकसित करनेपर भी ध्यान देना होगा। छोटे उद्योगों और सामान्य नागरिकोंतक तकनीकी लाभ पहुंचाना जरूरी है, ताकि इसका लाभ कुछ बड़ी कम्पनियोंतक सीमित न रहे।

अंतत: वैश्विक अर्थव्यवस्थाकी वर्तमान स्थिति यह संदेश देती है कि आर्थिक वृद्धि अपने आपमें पर्याप्त नहीं है। विकास तभी टिकाऊ माना जा सकता है, जब वह महंगीको नियंत्रित करने, रोजगार बढ़ाने, सार्वजनिक ऋणको सम्भालने और सामाजिक असमानता घटानेमें भी सहायक हो। युद्ध और व्यापारिक तनावोंको कम करनेके लिए कूटनीतिक प्रयास, सार्वजनिक वित्तमें अनुशासन तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ताके जिम्मेदार उपयोगके लिए प्रभावी नियम समयकी आवश्यकता हैं। विश्वके देशोंको यह समझना होगा कि आजकी परस्पर जुड़ी अर्थव्यवस्थामें किसी एक क्षेत्रका संकट शीघ्र ही दूसरे क्षेत्रोंतक पहुंच सकता है। सहयोग, दूरदर्शिता और संतुलित नीतियोंके माध्यमसे ही आर्थिक विकासकी सम्भावनाओंको सुरक्षित रखा जा सकता है।

अंधाधुंध विकाससे भीषण संकट

हम प्रकृतिका संदेश नहीं सुन रहे हैं। प्रकृतिका संदेश व्यापक और स्पष्ट रूपसे है कि स्वयंको बदलो या बर्बाद हो जाओ। सवाल यह है कि क्या हम अपने ध्यान भटकाने वाली चीजोंके शोर-शराबेके बीच इसे सुन सकते हैं।

❐ सुनीता नारायण

नेपालमें बाढ़से १४१० से अधिक व्यक्तियोंकी मौतकी पुष्टि हो चुकी है और अभी भी हजारों लोग लापता हैं। यह एक बेहद बड़ी एव दर्दनाक मानवीय त्रासदी है लेकिन एक तरहसे मनुष्यके जान-बूझकर किये गये कार्यों और हाथ-पर-हाथ धरे रहनेके कारण भी है। असलियतमें यह त्रासदी हमारी सोचका परिणाम है। मनुष्य का यह विश्वास है कि वह कुछ भी फिरसे बना या बदल सकता है। हम ब्रह्मांड और इसमें मौजूद सभी वस्तुओंको नियंत्रित कर सकते हैं। हम ही सबसे ताकतवर जीव हैं जो जलवायु परिवर्तनका सामना कर सकते हैंए, आखिर यह तो मौसमसे जुड़ी एक छोटी और मामूली-सी बात है। दरअसल यह सब हमारी वजहसे हो रहा है। मुझे इसे सिलसिलेवार ढंगसे समझाने दें। पहला सवाल यह है कि नेपालमें २६ अगस्तको क्या हुआ। हम सभीने जो तस्वीरें देखी होंगी, वे पहाड़के गिरनेकी हैं-बस ढहनेकी-जब अचानक बाढ़ और ढेरों मलबेने अपने रास्तेमें आने वाली सभी वस्तुओंको दफन कर दिया। इसमें चीनके आव्रजन कार्यालयकी विशाल इमारत भी शामिल थी। यह डरावना दृश्य-सा है, जैसे किसी वैज्ञानिक कल्पनापर आधारित फिल्मसे निकला हो।

अब हम जानते हैं कि यह अचानक आयी बाढ़ अत्यधिक बादल फटनेसे नहीं हुई थी। यह लांगटांग लिरुंग चोटीके पास ऊंचे हिमखंडके ढहनेसे शुरू हुई थी। इसमें अनुमानित १४.२ करोड़ घन मीटर बर्फ और चट्टानें खिसकीं और इससे ५.२ तीव्रताकी भूकम्पीय घटना हुई। इससे प्राकृतिक बांधोंका निर्माण हुआ, जिनमें पानी एवं हिमनदसे बहाकर लायी गाद जमा हो गयी। फिर जब यह बांध टूटा तो इससे निचले इलाकेमें और भी विनाशकारी बाढ़ आयी। इसका कोई मुख्य कारण नहीं है लेकिन दो घटनाओंने इस क्षेत्रमें इस और इसी तरहकी अन्य त्रासदियोंमें बहुत योगदान दिया है। एक है जलवायु परिवर्तनके कारण होने वाली गर्मी। तापमान बढ़नेसे हिमनद पिघलते हैं। यह पिघलकर जब पहाड़से नीचेकी ओर आते हैं तो इससे हिमोढ़ ढलानें कटने लगती हैं। यह बम है जो फटनेके लिए तैयार है। ऐसा नेपालमें भी हुआ है। इसके अलावा जलवायु परिवर्तनके कारण बेहद मुश्किल मौसम वाली घटनाओंकी आवृत्ति और तीव्रता बढ़ रही है और इससे बाढ़ और भूस्खलन जैसी भीषण आपदाएं आती हैं। ऐसी घटनाएं २०२५ में हिमाचल प्रदेश, २०२४ में सिक्किम और २०२१ में चमोलीमें देखी गयीं। लिहाजा हम जिम्मेदार हैं, हम सभी। इसमें विशेष रूपसे वे देश भी हैं, जिन्होंने वायुमंडलमें ग्रीनहाउस उत्सर्जनके बढ़नेमें सबसे अधिक योगदान दिया है। ग्रीनहाउसके कारण तापमान बढ़ा रहा है और इससे बेकाबू विनाश हो रहा है। लोगोंकी मौतकी ऐतिहासिक जिम्मेदारीसे सर्वाधिक अमीर और सबसे विकसित देश भी पल्ला नहीं झाड़ सकते हैं।

नेपालमें मरने वालोंकी संख्या बढ़ रही थी लेकिन विश्व १८७० के औद्योगिक कालकी तुलनामें १.५ डिग्री सेल्सियस तापमान वृद्धिकी सीमासे नीचे रहनेके परिकल्पित रास्तेपर आगे बढ़नेको तैयार नहीं था। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रमका अनुमान है कि दुनिया कुछ ही वर्षोंमें इस दायरेको लांघ जायगी। वैज्ञानिकोंको पता है कि १.५ डिग्री सेल्सियससे परे तापमान बढ़नेके प्रभाव बढ़ते जायंगे। इसके प्रभाव कहीं अधिक विनाशकारी होंगे- बर्फकी चादरोंके ढहनेसे लेकर अटलांटिक मेरिडियल ओवरटेकिंग सर्कुलेशन जैसी समुद्री धाराओंमें व्यवधान और बहुत कुछ। इस गर्मीमें हमने जो बेहद गर्मी, आग और अन्य मौसमकी असामान्यताएं देखीं, वे केवल उसकी झांकियां थी। काफी घटनाएं होनेका इंतजार कर रही हैं। फिर भी हम अपने पृथ्वीके तंत्रमें टूटनको लेकर शांत दिखते हैं। आज हम इंसानके अनुचित कृत्यों, जैसे बेवजह युद्धोंके कारण आर्थिक और आजीविकाकी चिन्ताओंसे बेहद विचलित हैं और यह मौजूदा संकट महत्वहीन लगता है। हम उत्सर्जनपर महज पैबंद लगा रहे हैं और प्रकृत्तिके दायरेमें रहनेके लिए बदलाव नहीं कर रहे हैं।

हिमालयके मुद्देपर वापस आते हैं। हम जानते हैं कि पारिस्थितिकीतंत्रके इन ज्वलंत स्थानोंपर कभी भी फटने वाले बमोंको विकासकी प्रकृतिने और बदहाल कर दिया है। हम प्रकृतिका ध्यान रखनेके बारेमें बढ़ चढ़कर बातें करते हैं लेकिन उसपर ध्यान ही नहीं दिया जाता है। हमें बदलती जलवायुपर अनिवार्य रूपसे जितना ध्यान रखना चाहिए, उतना रखते नहीं हैं। हम असलियतमें यह विश्वास करते हैं कि हम जो कर सकते हैं, उसे करते रहेंगे और उसका कोई प्रभाव भी उजागर नहीं होगा। जैसे संकीर्ण नदियोंपर बांध बनाकर तैयार होने वाली जलविद्युत परियोजनाओंको लें। मैंने पहले भी कहा है और इसे दोहराऊंगी, यह बांध विकासके नहीं है, बल्कि लापरवाहीके साथ किया विकास है। भारतके हिमालय क्षेत्रमें एकके बाद एक परियोजनाएं आ रही हैं, ताकि गंगाका स्वरूप ही बदल दिया जाय। गंगा स्वाभाविक रूपसे प्रवाहित होना बंद कर देंगी। इसका कारण यह है कि ये परियोजनाएं गंगाके पानीको नियंत्रित करेंगी, इसे बिजली उत्पन्न करनेके लिए ले जायंगी और फिर इसे वापस छोड़ देंगी। इसके साथ ही, हम पहाड़ोंमें सुरंगें बना रहे हैं और सड़कें बना रहे हैं, अक्सर ढलान प्रबंधनके प्रावधानके बिना। मैं और भी बहुत कुछ बता सकती हूं। सचाई यह है कि हम प्रकृतिका संदेश नहीं सुन रहे हैं। प्रकृतिका यह संदेश व्यापक और स्पष्ट रूपसे है-अपनी मानसिकता बदलोय यह सोच कि तुम मुझे वशमें कर सकते हो और मुझे घुटनोंपर ला सकते हो, काम नहीं करेगी। संदेश है 'बदलो या बर्बाद हो जाओ'। सवाल यह है कि क्या हम अपने ध्यान भटकाने वाली चीजोंके शोर-शराबेके बीच इसे सुन सकते हैं।



भरत मिलाप

❐ सदानन्द शास्त्री

भरतको जब पता चला कि माता कैकेयीने उन्हें राजसिंहासनपर बैठानेके लिए रामको १४ वर्ष का वनवास दिलाया है तो वह मातासे भला-बुरा कहने लगे और रामको वापस लानेके लिए वनकी ओर चल दिये। उधर वनमें प्राकृतिक शोभासे युक्त दर्शनीय स्थल चित्रकूट पर्वतपर निवास करते हुए राम-सीता प्राकृतिक छटाका आनन्द ले रहे थे, सहसा उन्हें चतुरंगिणी सेनाका कोलाहल सुनाई दिया और वन्य पशु इधर-उधर भागते हुए दिखाई दिये। यह देखकर राम लक्ष्मणसे बोले, ऐसा प्रतीत होता है कि इस वन-प्रदेशमें वन्य पशुओंके आखेट हेतु किसी राजा या राजकुमारका आगमन हुआ है। तुम जाकर इसका पता लगाओ। लक्ष्मण तुरन्त एक ऊंचे वृक्षपर चढ़ गये। उन्होंने देखा, उत्तर दिशासे एक विशाल सेना हाथी, घोड़ों और अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित सैनिकोंके साथ चली आ रही है जिसके आगे अयोध्याकी पताका लहरा रही थी। लक्ष्मण समझ गये कि वह अयोध्याकी सेना है। रामके पास आकर क्रोधसे लक्ष्मणने कहा, भैया! कैकेयीका पुत्र भरत सेना लेकर इधर चला आ रहा है। वह वनमें अकेला पाकर हमारा वध कर देना चाहता है जिससे निष्कंटक होकर अयोध्यापर राज्य कर सके। मैं इस भरतको उसके पापोंका फल चखाऊंगा। रामने कहा, लक्ष्मण! तुम ये कैसी बातें कर रहे हो। भरत तो मुझे प्राणोंसे भी प्रिय है। अवश्य ही वह मुझे अयोध्या वापस ले जानेके लिए आया होगा। बादमें लक्ष्मण अपने कठोर शब्दोंके लिए क्षमा मांगते हैं और भरत राम जीकी चरण पादुकाएं अयोध्या ले जाते हैं एवं राजकाज संभालते हैं। लखन राम सियं सुनि सुर बानी। अति सुखु लहेउ न जाइ बखानी॥ इहां भरतु सब सहित सहाय। मंदाकिनीं पुनीत नहाय॥ सरित समीप राखि सब लोगा। मागि मातु गुर सचिव नियोगा॥ चले भरतु जहं सिय रघुराई। साथ निषादनाथु लघु भाई॥ लक्ष्मणजी, श्री रामचंद्रजी और सीताजीने देवताओंकी वाणी सुनकर अत्यंत सुख पाया, जो वर्णन नहीं किया जा सकता। यहां भरतजीने सारे समाजके साथ पवित्र मंदाकिनीमें स्नान किया। फिर सबको नदीके समीप ठहराकर तथा माता, गुरु और मंत्रीकी आज्ञा मांग कर निषादराज और शत्रुघ्नको साथ लेकर भरतजी वहां चले जहां श्री सीताजी और श्री रघुनाथजी थे।

हड्डियोंके बदलावको गम्भीरतासे लें

❐ ऋतुपर्ण दवे

हड्डी गतिशील ऊतक है जो अस्थि निर्माण, मॉडलिंग और रीमॉडलिंग जैसी कई प्रक्रियाओंके माध्यमसे लगातार बदलती और अनुकूलित होती रहती है। इसमें आम तौरपर अस्थि क्लास्ट और अस्थ